फ़ज़ाइले कुरआन

69

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहमवाला है।

सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सारे जहान का पालनहार है। हम उसी से मदद व माफी चाहते हैं। अल्लाह की ला तादाद सलामती, रहमते व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर आप की आल व औलाद और असहाब रजि. पर। व बअद –

अल्लाह तआला ने सबसे अफ़ज़ल आसमानी किताब (कुरआन) को सबसे अफ़ज़ल महीने (रमज़ान) की सबसे अफ़ज़ल रात (लैलतुल क़द्र) में लोहे महफ़ूज़ से आसमानी दुनिया पर एक बार में नाज़िल किया और उसे बैतुल इज़्ज़ा में रख दिया। जैसा कि इर्शादे बारी है "वह रमज़ान का महीना था जिसमें कुरआन नाज़िल किया गया। जो लोगों की हिदायत का ज़रिया है और उसमें हिदायत व (हक़ व बातिल में) फ़र्क़ करने की निशानियां हैं।" (बक़रह आयत 185) "हमने इसे लैलतुल क़द्र में नाज़िल किया।" (क़द्र आयत 01)

मालूम हुआ कि कुरआन का माहे रमज़ान से गहरा तअल्लुक है। इसलिए माहे रमज़ान में इसकी तिलावत का ज़्यादा एहतेमाम करना चाहिये खुद आप सल्ल. भी इस माह में इसकी ज़्यादा तिलावत किया करते थे। आप सल्ल. लोगों में सबसे ज़्यादा ख़ैर के काम करने वाले थे। जिब्रील अलैहि. रमज़ान की हर रात आप सल्ल. से मुलाक़ात करते और आप सल्ल. उन्हें क़ुरआन सुनाया करते थे।" (बुख़ारी 1902)

आइये जानते हैं कि कुरआने करीम के फ़ज़ाइल क्या हैं –

1. कुरआन अल्लाह का कलाम है –

कुरआन की सबसे बड़ी फ़ज़ीलत यह है कि यह उस अल्लाह का कलाम है जो सारी कायनात का ख़ालिक़ व मालिक है। "कुरआन एक अज़ीम किताब है जो लोहे महफूज में दर्ज है। जिसे पाकीज़ा लोगों के सिवा कोई छू नहीं सकता। यह सारे जहान के पालन हार का उतारा हुआ है। (वाक़िआ आयत 77 से 80) कुरआन की फ़ज़ीलत बयान करते हुए रसूल सल्ल. ने फ़रमाया कि

1. अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जिस शख़्स को कुरआन (के मुतालेअ) ने मेरा ज़िक्र करने और मुझसे दुआ मांगने से रोका, उसे मैं दूसरे दुआ मांगने वालों से बेहतर चीज़ से नवाज़ूंगा।" अल्लाह के कलाम को दूसरे कलामों पर वही फ़ज़ीलत हासिल है जो अल्लाह को अपनी मख़लूक़ पर हासिल है।" (तिर्मिज़ी 2694)

2. कुरआन (रोज़े क़यामत) तुम्हारे हक़ मे गवाही देगा या तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देगा।" (मुस्लिम 1897) मतलब यह कि अगर इसे पढ़ा और इसके मुताबिक़ अमल किया तो हमारे हक़ में गवाही देगा और अगर इससे दूरी इख्तियार की ओर इस पर अमल नहीं किया तो रोज़े

क़यामत यह हमारे ख़िलाफ़ गवाही देगा।
3. कुरआन पढ़ा करो क्योंकि क़यामत के दिन यह अपने पढ़ने वालों के लिए सिफ़ारिशी बन कर आएगा।'' (मुस्लिम 1874)
4. जिसने कुरआन को अपना रहबर व रहनुमा बनाया। उसे यह जन्नत में ले जाएगा और जिसने इसकी परवाह न की, उसे यह जहन्नम में ले जाएगा। (सही इब्ने हुब्बान जिल्द 1 सफ़ा 331)
2. कुरआन बेमिसाल किताब है –

कुरआन अल्लाह की सबसे अफ़ज़ल किताब है और अपनी फ़साहत व बलाग़त के एतेबार से बेमिसाल है। ईर्शादे बारी है ''कुफ़्फ़ार यह कहते है कि (इस) पैग़म्बर ने क़ुआन खुद से बना लिया है। अगर यह सच्चे हैं तो इस जैसा कलाम बना लाएं। (तूर आयत 33, 34) ''अगर तमाम जिन्न व इन्स मिल कर इस जैसा कुरआन लाना चाहें तो नहीं ला सकते। चाहे वो एक दूसरे के मददगार बन जाएं। (इस्रा आयत 88)

''अगर यह (कुरआन) अल्लाह के सिवा किसी और का कलाम होता तो इसमें बहुत सा इख़्तेलाफ पाते। (निसा आयत 82)
3. कुरआन सीधा रास्ता दिखाता है –

कुरआन दुनिया व आख़िरत की भलाई की तरफ़ लोगों की रहनुमाई करता है ''यक़ीनन यह कुरआन वह रास्ता दिखलाता है जो बहुत सीधा है और उन मोमिनों को जो नेक अमल करते हैं इस बात की खुशख़बरी देता है कि उनके लिए बहुत बड़ा बदला है।'' (इस्रा आयत 10) ''कुरआन के ज़रिये अल्लाह उन लोगों को सलामती की राहें दिखलाता है जो उसकी इताअत करते हैं और अपने हुक्म से उन्हें अन्धेरों से निकाल कर रोशनी की तरफ़ उनकी रहनुमाई करता है।'' (माइदा, आयत नं. 15–16)
4. कुरआन शक व शुब्हे से बालातर किताब है –

अल्लाह ने फ़रमाया ''यह वो लोग हैं कि जब इनके पास ज़िक्र (कुरआन) आया तो इन्होंने इसका इन्कार कर दिया हालांकि यह एक ज़बरदस्त किताब है। जिसमे झूठ ना आगे से राह पा सकता है और ना पीछे से।'' (फ़ुसिलत आयत 41–42) और यह कि ''यह वह किताब है, जिसमें शक की कोई गुन्जाइश नहीं।'' (बक़रह आयत 2)
5. कुरआन का मुहाफ़िज़ अल्लाह है –

फ़रमाने इलाही है''बैशक हम ने ही ज़िक्र (कुरआन) को उतारा है और यक़ीनन हम ही इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं।'' (हिज्र आयत 9) जब जिब्रील अलैहि. आप सल्ल. के पास आकर कुरआन पहुंचाते तो आप सल्ल. इस डर से कि इन नाज़िल हुई आयात को मैं भूल न जाऊं। जिब्रील अलैहि. के साथ–साथ उन आयात को पढ़ने लगते। ऐसी सूरत में इर्शादे बारी हुआ ''(ऐ मुहम्मद सल्ल.) वहयी के पढ़ने के लिए अपनी ज़बान न चलाया करो कि इसे जल्दी याद कर लो। इसका जमा करना और पढ़वाना हमारे ज़िम्मे है। जब हम वह्यी पढ़ा करें तो (तुम उसे सुना करो और) फिर उसी तरह पढ़ा करो। फिर इसके मआनी का बयान भी

हमारे ज़िम्मे हैं। (क़यामा, आयत 16 से 19) इस तरह कुरआन आप सल्ल. के सीने में महफ़ूज़ हो जाता। फिर आप इन्हें सहाबा किराम रजि. को सुनाते। वो भी इसे याद कर लेते। इसके अलावा कुछ सहाबा रजि. इन आयात को लिख भी लेते थे। इस तरह कुरआन आप सल्ल की ज़िन्दगी ही में लिखा हुआ भी था और कई सहाबा किराम को हिफ़्ज़ भी हो गया था। फिर हज़रत अबुबकर रजि. के दौरे ख़िलाफ़त में उनके हुक्म से ज़ैद बिन साबित रजि0 ने कुरआन को एक जगह जमा कर दिया बाद में उसमान रजि. ने इन सहीफों को एक ही जिल्द में मुरत्तब करा दिया। फिर उसकी कई नक़ले कराके उन्हें पूरी इस्लामी दुनिया में फैला दिया। आज भी दुनिया के हर कोने से कुरआन लेकर अगर चैक किया जाए तो अलफ़ाज़ का फर्क तो दूर ज़ेर व ज़बर का फ़र्क भी नहीं मिलेगा। इसके अलावा दुनिया भर में कुरआन के हाफ़िज़ मौजूद हैं और मुसलमानों में हिफ़्ज़े कुरआन का एक ऐसा जज़्बा पाया जाता है जो दुनिया की किसी किताब को हासिल नहीं है। वाल्दैन अपनी औलाद को कुरआन हिफ़्ज़ कराना अपनी और अपने बच्चों की ख़ुशनसीबी समझते हैं। मुसलमानों का कुरआन से यह लगाव इस बात का नतीजा है कि अल्लाह ने इसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा ले रखा है।

6. कुरआन में शिफ़ा है –

कुरआन दिल की एतेक़ादी बीमारियों जैसे कुफ़्र, शिर्क व निफ़ाक़ और अख़लाक़ी बीमारियों जैसे हसद, बुग़ज़, कीना और लालच वगैरह के लिए शिफ़ा है। इर्शादे बारी है, ऐ लोगों! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत आ चुकी हे। यह दिलों की बीमारियों की शिफ़ा व मोमिनों के लिए हिदायत और रहमत है।'' (फ़ुसिलत आयत 44) ''यह (कुरआन) ईमान वालों के लिए हिदायत और शिफ़ा है।'' (इसरा आयत 82) यह जिस्मानी बीमारियों के लिए भी शिफ़ा है। ''नबी सल्ल. जब बीमार होते तो अपने ऊपर मऊज़ात (सूरह फ़लक़ व नास) पढ़कर दम करते। फिर आप सल्ल. की बीमारी जब ज़्यादा बढ़ गई तो आएशा रजि. इन्हें पढ़कर आप सल्ल. पर दम करने लगीं। (बुख़ारी 5016) इसी तरह एक सफ़र के दौरान ''अबु सईद ख़ुदरी रजि. ने बिच्छु के काटे एक शख़्स पर सूरह फ़ातिहा पढ़ कर दम किया तो उसे इससे शिफ़ा हुई।'' (बुख़ारी 2276 5736)

7. तिलावते कुरआन की फ़ज़ीलत

1. अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फरमाया ''जो शख़्स अल्लाह की किताब (कुरआन) क एक हर्फ़ पढ़ता है उसे एक नेकी मिलती हैं और एक नेकी उस जैसी दस नैकियों के बराबर होती है। 'अलिफ़ लाम मीम' एक नहीं तीन हर्फ़ हैं। (तिर्मिज़ी 2680 सही)

2. ''तुम कुरआन पढ़ते रहा करो क्योंकि यह क़यामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिए सिफ़ारिश करेगा। (मुस्लिम 1874)

3. ''तुम अपने घरों को क़ब्रिस्तान न बनाओ। बेशक! शैतान उस घर से भाग जाता है जिसमें सूरह बक़रह की तिलावत की जाती है।

(मुस्लिम 1824 अहमद 9030 तिर्मिजी 2649)

4. कुरआन सीखने व सिखलाने वाले सबसे बेहतर हैं। ''तुम में से सबसे बेहतर वोह है जिसने कुरआन सीखा और दूसरों को सिखलाया।'' (बुख़ारी 5027 तिर्मिजी 2677)

5. कुरआन पढ़ने और उस पर अमल करने वाले अल्लाह के ख़ास बन्दे हैं। ''बेशक! लोगों में से कुछ लोग अल्लाह के ख़ास बन्दे हैं और वोह कुरआन पढ़ने वाले और उस पर अमल करने वाले हैं। यह अल्लाह के दोस्त व उसके ख़ास बन्दे हैं।'' (इब्ने माजा 215 सही)

हाफ़िज़े कुरआन की फ़ज़ीलत

''साहिबे कुरआन (कुरआन हिफ़ज़ करने व उस पर अमल करने वाले) से कहा जाएगा, क़िराअत करते जाओ और (जन्नत की सीढ़ियों पर) चढ़ते जाओ। तरतील के साथ पढ़ो जैसा कि तुम दुनिया में तरतील के साथ पढ़ा करते थे। पस तुम्हारी मंज़िल वहां होगी, जहां तुम आख़िरी आयत ख़त्म करोगे।'' (अहमद 11380 इब्ने माजा 3780 अबु दाऊद 1464 सही) ''जो शख़्स कुरआने करीम का माहिर हो, वह इज़्ज़तवाले फ़रमाबरदार फ़रिश्तों के साथ होगा ओर जो शख़्स कुरआन पढ़ता हो परेशानी के साथ (यानि अटक–अटक कर) और तक्लीफ़ महसूस करता हो तो उसके लिए दोहरा अज्र (बदला) है। (बुख़ारी 4937 मुस्लिम 1862 अबु दाऊद 1454)

नमाज़ में क़िराअते कुरआन की फ़ज़ीलत

''क्या तुम में से कोई शख़्स यह बात पसंद करता है कि जब वोह अपने घर वालों के पास वापिस लौटे तो वहां तीन मोटी–ताज़ी हामिला ऊंटनियां पाए।'' फिर फ़रमाया तुम में से कोई शख़्स अपनी नमाज़ में तीन आयात की तिलावत करे। यह उसके लिए तीन मोटी–ताज़ा हामिला ऊंटनियो से बेहतर है।'' (मुस्लिम 1872 अहमद 9141) ''तुम में से कौन है जो यह पसंद करता हो कि वह हर रोज़ सुबह सवेरे बतहान या अक़ीक़ मे जाए। फिर वहां से दो मोटी–ताज़ी ऊंटनियां बग़ैर किसी गुनाह व क़तअ रहमी के ले आए। हमने कहा–ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल. हम सब पसंद करते हैं तो आप सल्ल. ने फ़रमाया ''तो क्या तुममे से कोई शख़्स सुबह–सुबह मस्जिद में नहीं जाता ? जहां वह कुरआन की दो आयतों का इल्म हांसिल करे या उनकी तिलावत करे। यह उसके लिए दो ऊंटनियों से बेहतर है और तीन आयतें तीन ऊंटनियों से बेहतर हैं और चार आयात चार ऊंटनियों से बेहतर हैं। फिर इसी तरह हर आयत एक ऊंटनी से बेहतर होगी। (मुस्लिम 1873 अबु दाऊद 1456)

नमाज़ में ज़्यादा कुरआन पढ़ने वाला शख़्स क़ाबिले रश्क है –

''सिर्फ दो (तरह के) शख़्स ही क़ाबिले रश्क हैं। एक वह जिसे अल्लह ने कुरआन दिया और वह उसके साथ दिन व रात के वक़्तों में (नमाज़ में) क़याम करता रहा व अमल करता रहा और दूसरा वह जिसे अल्लाह ने माल दिया और वह उसे दिन व रात के वक्तों में खर्च करता

है।'' (बुख़ारी 5025 मुस्लिम 1894 इब्ने माजा 4209)

दौराने क़िराअत रहमते बारी का नुजूल –

''एक शख़्स सूरह क़हफ़ की तिलावत कर रहा था। उसके पास उसका घोड़ा दो रस्सियों के साथ बंधा हुआ था। अचानक एक बादल आया और उस शख़्स के ऊपर छा गया। फिर वह घूमने और उसके क़रीब होने लगा जिससे उसका घोड़ा डर कर उछलने लगा। जब सुबह हुई तो उसने आप सल्ल. के पास आकर रात का सारा वाक़िआ सुनाया। तब आप सल्ल. ने फ़रमाया ''यह अल्लाह की रहमत थी जो कुरआन के लिए नाज़िल हुई थी।'' (बुख़ारी 5011 मुस्लिम 1856)

उसैद बिन हदीर रजि. कहते हैं कि मैं रात को नमाज़ में सूरह बक़रह पढ़ रहा था और मेरा घोड़ा भी क़रीब ही बंधा हुआ था। अचानक घोड़ा बिदका तो मैं ख़ामोश हो गया। जब मैं ख़ामोश हुआ तो घोड़ा भी पुरसुकून हो गया। मैने फिर क़िराअत शुरु की तो वह फिर बिदकने लगा। मै ख़ामोश हुआ तो वह भी ठहर गया। मैने फिर क़िराअत शुरु की तो वह फिर बिदका। उधर मेरा बेटा यहया भी था। मैं डरा कि कहीं वह बच्चे को न कुचल दे। चुनांचे मैने सलाम फेरा और उसके पास गया। घोड़े को बच्चे से दूर किया फिर मैने आसमान की तरफ़ नज़र उठाई तो देखा कि एक छतरी सी है और उसमें से चिराग़ चमक रहे हैं। फिर यह छतरीनुमा चीज़ आसमान की तरफ़ चली गई। हत्ताकि मेरी नज़रों से ओझल हो गई। सुबह आप सल्ल. को मैने सारी बात बताई तो आप सल्ल ने फ़रमाया ''तुम्हें अपनी क़िराअत जारी रखना चाहिये थी। मै बोला कि मुझे अपने बेटे पर तरस आ रहा था। आप सल्ल. ने फ़रमाया कि यह फरिश्ते थे जो तुम्हारी आवाज़ के करीब आ गए थे। अगर तुम क़िराअत जारी रखते तो सुबह में लोग भी उन्हें देख लेते और वोह लोगों से छिप न पाते।'' (बुख़ारी 5018 मुस्लिम 1859 अहमद 11788)

कुरआन की तासीर

''अल्लाह ने बेहतरीन कलाम नाज़िल किया। इसके मज़ामीन मिलते–जुलते हैं और बार–बार दोहराए जाते हैं। इसे पढ़ या सुन कर उन लोगों के रोंगटे खड़े जो जाते हैं जो अपने रब से डरते हैं। फिर उनके दिल व जिस्म नर्म होकर अल्लाह का ज़िक्र करने लगते हैं।'' (ज़ुमर आयत 23) कुरआन इस क़दर असरकारक है कि ''अगर इसे पहाड़ पर नाज़िल किया जाता तो वह अल्लाह के डर की वजह से रेज़ा–रेज़ा हो जाता।'' (हश्र आयत 21) लेकिन हम हैं कि हमारे दिलों पर इसका जैसे कोई असर ही नहीं होता। हम कुरआन पाबन्दी से पढ़ा करते हैं। एक के बाद एक कुरआन ख़त्म करते जाते हैं मगर हमारे ईमान में इज़ाफ़ा नहीं होता। वजह यह है कि हम इसे समझ कर नहीं पढ़ते। न इसके मआनी जानने की कोशिश करते हैं और न इसकी चाहत ही रखते हैं। बस सवाब हासिल करने की ग़रज़ से इसकी तिलावत करते जाते हैं। मगर इसमें किसे हलाल व किसे हराम बताया गया है ? न हम जानते हैं और न ही जानने की कोशिश करते हैं। जब ऐसा है तो हम

इसके अहकामात पर अमल कैसे कर सकते हैं ? यह कुरआन ही की तासीर थी कि इस्लाम के दुश्मन रहे और आप सल्ल की जान के प्यासे रहे लोगों ने भी जब इसे पढ़ा या सुना तो मुतआस्सिर हुए बिना न रह सके। बल्कि इस्लाम और अल्लाह के रसूल सल्ल. पर जान निछावर करने वाले बन गए। जैसे हज़रत उमर रजि., सअद बिन मआज़ रजि. और उसैद बिन हदीर रजि.। सच फ़रमाया अल्लाह ने "बेशक! इस (कुरआन) में उस शख़्स के लिए नसीहत है जो (ज़िन्दा) दिल रखता हो और दिल से ध्यान लगा कर सुनता हो। (क़ाफ़ आयत 37)

कुरआन को मज़बूती से थाम लें

अगर हम अल्लाह की खुशनूदी और आख़िरत में निजात चाहते हैं तो हमें इसे मज़बूती से थामना होगा। इसकी तालीमात पर अमल करना होगा। जैसा कि इर्शादे बारीतआला है "तुम सब मिल कर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो और आपस में तफ़रक़ा (फूट) न डालो।" (आले इमरान आयत 103) अल्लाह के रसूल सल्ल. का फ़रमान है "मैं तुम में एक ऐसी चीज़ छोड़कर जा रहा हूं जिसे तुमने मज़बूती से थाम लिया तो कभी गुमराह न होगे और वह चीज़ अल्लाह की किताब (कुरआन) है।" (मुस्लिम 2950) एक और रिवायत के अलफ़ाज़ हैं "मैं तुममे दो चीजें छोड़े जा रहा हूं। जब तक इन्हें मज़बूती से थामे रहोगे हरगिज़ गुमराह न होगे। वो दो चीजें अल्लाह की किताब (कुरआन) और उसके रसूल सल्ल. की सुन्नत (हदीस) है।" (मालिक 1601)

लेकिन अफ़सोस! उम्मते मुस्लिमा की अक्सरियत आज कुरआन से दूर है। अक्सर घरों में कुरआन सिर्फ अलमारियों या मचान की ज़ीनत बन कर रह गए हैं। बहुत से मुसलमान तो इसे पढ़ना भी नहीं जानते और जो पढ़ना जानते हैं उनमें से भी ज़्यादातर ऐसे हैं जो सूरह फ़ातिहा के मआनी तक नहीं जानते। अल्हम्दुलिल्लाह! हाफ़िज़े कुरआन तो बहुत हैं मगर अफ़सोस इस पर अमल करने वाले और इसे अपनी ज़िन्दगी का दस्तूर बनाने वाले बहुत कम हैं। इसलिए डर लगता है कहीं ऐसा न हो कि कल रोज़े क़यामत अल्लाह के रसूल सल्ल. अल्लाह से हमारी शिकायत यू न करें कि "ऐ मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने इस कुरआन को छोड़ रखा था।" (फ़ुर्क़ान आयत 30)

अल्लाह से दुआ है कि वह हमें कुरआन सीखने, पढ़ने, समझने उसमें ग़ौर व फ़िक्र करने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए। आमीन।

आपकी दीनी भाई
मुहम्मद सईद
09214836639
09887239649